Toppersnotes

Unleash the topper in you

CGPSC

State Civil Services

Chhattisgarh Public Service Commission

(Prelims)

पेपर – 1 || भाग - 2

आधुनिक भारत और छत्तीसगढ़ का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

Chhattisgarh Public Service Commission

PRELIMS

पेपर - 1 भाग – 2

आधुनिक भारत और छत्तीसगढ़ का इतिहास

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन** • यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक • भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण • विदेशी शक्तियां	**1**
2.	**मुगल साम्राज्य का पतन** • विदेशी आक्रमण • उत्तर कालीन मुगल साम्राज्य • मुगल साम्राज्य के पतन के कारण	**8**
3.	**नए राज्यों का उदय** • उत्तराधिकारी राज्य • योद्धा राज्य • स्वतंत्र राज्य	**12**
4.	**भारत में ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विस्तार** • वणिकवाद • प्राच्यवाद (ओरिएण्टलिज्म) • भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताएँ • बंगाल • मैसूर • मराठा • पंजाब • सिंध • अवध • पड़ोसी देशों में ब्रिटिश विस्तार • ब्रिटिश की विस्तारवादी नीतियाँ	**14**
5.	**1857 तक प्रशासनिक व्यवस्था** • ब्रिटिश प्रेसीडेंसीयाँ • 1857 तक संवैधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक विकास	**30**
6.	**1857 का विद्रोह** • 1857 के विद्रोह का महत्व • 1857 के विद्रोह के कारण • प्रसार • 1857 के विद्रोह के दौरान क्षेत्रीय नेता • विद्रोह का दमन • विद्रोह से जुड़े ब्रिटिश सेना के अधिकारी • असफलता के कारण • विद्रोह का प्रभाव	**34**

7.	**1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन** • भारत सरकार अधिनियम 1858 • भारत परिषद अधिनियम 1861 • तीन दिल्ली दरबार • सिविल सेवा में परिवर्तन • सेना में परिवर्तन • रियासतों के साथ संबंध • श्रम कानून • भारत परिषद् अधिनियम 1892	**40**
8.	**सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन (19वीं सदी)** • कारण • प्रमुख समाज सुधारक • हिंदू सुधार आंदोलन • मुस्लिम सुधार आन्दोलन • पारसी सुधार आंदोलन • सिख सुधार आंदोलन • थियोसोफिकल मूवमेंट • सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव	**43**
9.	**ब्रिटिश शासन के तहत अर्थव्यवस्था** • ब्रिटिश भू राजस्व नीतियाँ • व्यापार एवं वाणिज्य • धन की निकासी सिद्धांत • ब्रिटिश शासन के दौरान आर्थिक विकास • भारत में डाक प्रणाली	**55**
10.	**शिक्षा और प्रेस का विकास** • 1857 से पहले की शिक्षा • 1857 के बाद की शिक्षा • स्थानीय शिक्षा का विकास • तकनीकी शिक्षा का विकास • शिक्षा में यूरोपीय लोगों का योगदान • शिक्षा में स्वदेशी प्रयास • शिक्षा पर ब्रिटिश नीति का मूल्यांकन • प्रेस का विकास • राष्ट्रवादी और साहित्यिक विकास	**64**
11.	**ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोकप्रिय आंदोलन** • लोगों के प्रतिरोध के लिए जिम्मेदार कारक • नागरिक विद्रोह • राजनीतिक धार्मिक आंदोलन • सामंती विद्रोह • अन्य नागरिक विद्रोह • आदिवासी विद्रोह • किसान आंदोलन • प्रांतों में किसान गतिविधि	**71**

12.	**राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण 1885-1905)** • देश का एकीकरण • शिक्षा और पश्चिमी विचार • प्रेस और साहित्य • स्थानीय साहित्य का विकास • भारत के अतीत की पुनर्खोज • सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन • मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का उदय • सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियां और नस्लीय विरोध • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संघ • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना • उदारवादी चरण (1885-1905)	**82**
13.	**उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग/ चरमपंथी चरण (1905-1909)** • चरमपंथियों के उदय के कारण • बंगाल का विभाजन • विभाजन विरोधी आंदोलन • स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन • ऑल इंडिया मुस्लिम लीग • कांग्रेस का सूरत विभाजन (1907) • सरकार की रणनीति • 1909 के मॉर्ले मिंटो सुधार / 1909 का भारतीय परिषद अधिनियम • उग्रवादी राष्ट्रवाद का विकास • क्रांतिकारी आंदोलन का पहला चरण • विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियां • प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन • होम रूल लीग आंदोलन • कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916) • लखनऊ पैक्ट	**87**
14.	**जन आंदोलन : गांधीवादी युग (1917-1925)** • गांधी का प्रारंभिक जीवन • संघर्ष का मध्यम चरण (1894-1906) • निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण (1906-1914) • महात्मा गांधी का भारत आगमन • मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार अथवा भारत सरकार अधिनियम, 1919 • रॉलेट एक्ट (1919) • जलियांवाला बाग नरसंहार (13 अप्रैल, 1919) • खिलाफत आंदोलन • असहयोग / खिलाफत आंदोलन	**98**
15.	**स्वराज के लिए संघर्ष (1925 1939)** • कांग्रेस खिलाफत स्वराज्य पार्टी या स्वराज पार्टी • मार्क्सवादी और समाजवादी विचारों का प्रसार • 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधि का पुनरुत्थान • क्रांतिकारी गतिविधियां	**106**

	• साइमन कमीशन/भारतीय सांविधिक आयोग (1927) • मुस्लिम लीग के दिल्ली प्रस्ताव (1927) • नेहरू रिपोर्ट (1928) • जिन्ना के चौदह सूत्र • कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन (1928) • इरविन की घोषणा (31 अक्टूबर, 1929) • दिल्ली घोषणापत्र (नवंबर 1929) • कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929) • सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) • कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931) • गोलमेज सम्मेलन • सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू करना • सांप्रदायिक पुरस्कार और पूना पैक्ट • गांधीजी और अम्बेडकर वैचारिक समानताएं और मतभेद • भारत सरकार अधिनियम, 1935 • कांग्रेस के हरिपुरा और त्रिपुरी अधिवेशन • द्वितीय विश्व युद्ध (1939) • वर्धा में सीडब्ल्यूसी (कांग्रेस वर्किंग कमिटी) की बैठक • कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन (मार्च 1940) • सुभाष चंद्र बोस • गांधी और बोस वैचारिक मतभेद	
16.	**स्वतंत्रता की ओर (1940 1947)** • मुस्लिम लीग का लाहौर प्रस्ताव (1940) • अगस्त प्रस्ताव (1940) • व्यक्तिगत सत्याग्रह (1941) • द क्रिप्स मिशन (1942) • भारत छोड़ो आंदोलन (1942) • गांधी के अनशन • 1943 का बंगाल अकाल • राजगोपालाचारी फॉर्मूला (1944) • देसाई लियाकत समझौता (1945) • वेवेल योजना (1945) • सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) • आम चुनाव (1945 46) • 1945 46 की सर्दियों में विद्रोह की तीन घटनाये • कैबिनेट मिशन (1946) • प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस और सांप्रदायिक दंगे • संविधान सभा का चुनाव (1946) • अंतरिम सरकार • लीग का अवरोधक दृष्टिकोण • भारत में साम्प्रदायिकता • संविधान सभा का गठन (1946)	**121**

	• क्लेमेंट एटली की घोषणा • माउंटबेटन योजना (3 जून 1947) • भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम	
17.	**स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारत** • सीमा आयोग • संसाधनों का विभाजन • रियासतों का एकीकरण	**132**
18.	**महत्वपूर्ण व्यक्ति और घटनाएँ** • गवर्नर जनरल • वायसराय • कांग्रेस के कुछ महत्वपूर्ण सत्र • क्रांतिकारी संगठन/पार्टियाँ • क्रांतिकारी घटनाएँ/मामले	**135**
19.	**राज्यों का पुनर्गठन** • भाषाई राज्यों के लिए आंदोलन • आजादी से पहले • आजादी के बाद • 1956 के बाद नए राज्य और केंद्र शासित प्रदेश बनाए गए	**143**
20.	**नेहरू की विदेशी नीति** • भारतीय विदेश नीति का स्वतंत्रता-पूर्व स्टैंड • भारत की विदेश नीति को नियंत्रित करने वाले मूल सिद्धांत • पंचशील • गुटनिरपेक्ष आंदोलन • NAM- ने भारत को कैसे लाभान्वित किया हैं? • उपनिवेशवाद, जातिवाद और साम्राज्यवाद विरोधी की नीति • अंतरराष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान • विदेशी आर्थिक सहायता - संयुक्त राष्ट्र को सहायता, अंतर्राष्ट्रीय कानून और एक न्यायसंगत और समान विश्व व्यवस्था	**148**
21.	**स्वतंत्र भारत के बाद भूमि सुधार** • भूमि सुधार की आवश्यकता • भूमि सुधार विफलता के कारण • भूमि सुधार, कृषि उत्पादकता और गरीबी उन्मूलन के बीच संबंध	**154**
22.	**आजादी के बाद से भारत के युद्ध** • पहला भारत-पाकिस्तान युद्ध: 1947-48 • दूसरा भारत-पाकिस्तान युद्ध: 1965	**157**
	छत्तीसगढ़ का इतिहास	
1.	**छत्तीसगढ़ का प्राचीन इतिहास**	**164**
2.	**मध्यकालीन छत्तीसगढ़ का इतिहास**	**176**
3.	**बस्तर का इतिहास**	**179**
4.	**आधुनिकालीन छत्तीसगढ़ का इतिहास**	**184**
5.	**छत्तीसगढ़ जनजातीय विद्रोह**	**193**
6.	**छत्तीसगढ़ में मजदूर आन्दोलन**	**196**
7.	**छत्तीसगढ़ का जंगल सत्याग्रह**	**200**
8.	**छत्तीसगढ़ के 36 गढ़ और रियासतें**	**204**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

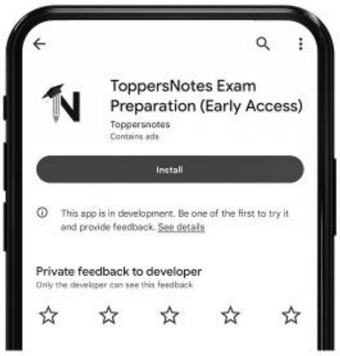

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।

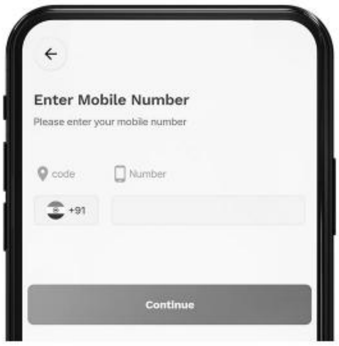

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें।

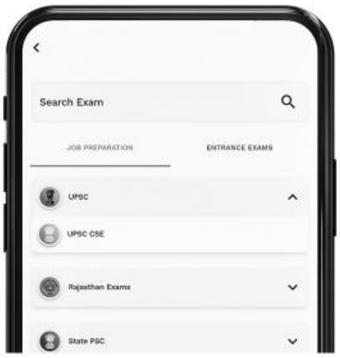

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें।

सर्च बटन पर क्लिक करें।

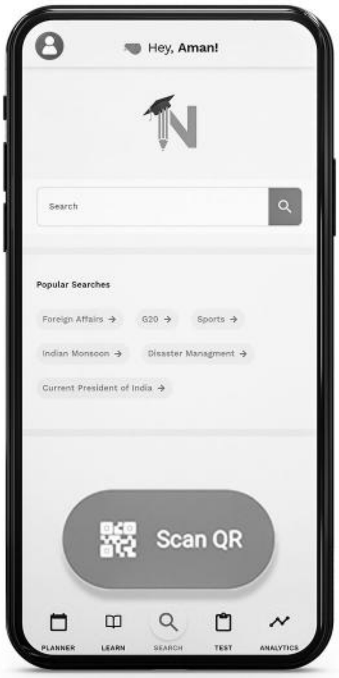

SCAN QR पर क्लिक करें।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए **hello@toppersnotes.com** पर मेल करें या **766 56 41 122** पर whatsapp करें।

1 CHAPTER भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

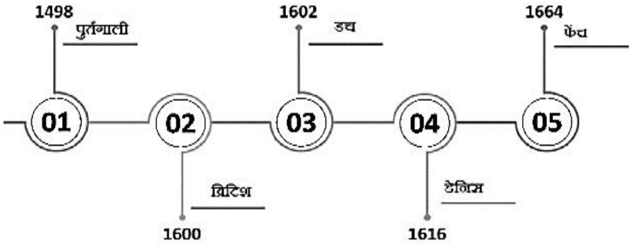

यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक

- **उष्ण कटिबन्धीय वस्तुओं** जैसे-मसाले,रेशम, कीमती पत्थर, चीनी मिट्टी के बरतन आदि की **यूरोप में भारी माँग**
- 1453 ई. में **कुस्तुनतुनिया (तुर्की)पर उस्मानिया तुर्कों का कब्जा** जिससे यूरोपियों का एशियाई व्यापार बाधित हुआ तथा नये व्यापार मार्गों की आवश्यकता उत्पन्न हुई
- **पुनर्जागरण एवं वैज्ञानिक क्रान्ति** के फलस्वरूप यूरोप में समुद्री कम्पास, जहाज की चाल मापने वाला उपकरण, एस्ट्रोलैब (अक्षांश -देशान्तरमापक), त्रिकोणपाल, तोपों एवं बन्दूकों काअविष्कार हुआ। इससे समुद्री यात्राएँ काफी सुरक्षित हो गयी।
- **भारत की अपार संपदा:** मार्को पोलो और कुछ अन्य स्रोतों से यूरोपीय लोगों को भारत की अपार संपत्ति के बारे में पता चला।
- **युरोप में तीव्र औद्योगीकरण** तथा बाजार के विस्तार की खोज आकांक्षा
- तत्कालीन भारत में **कमज़ोर मुग़ल सत्ता** तथा नवीन क्षेत्रीय राज्यों का उदय

भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण-

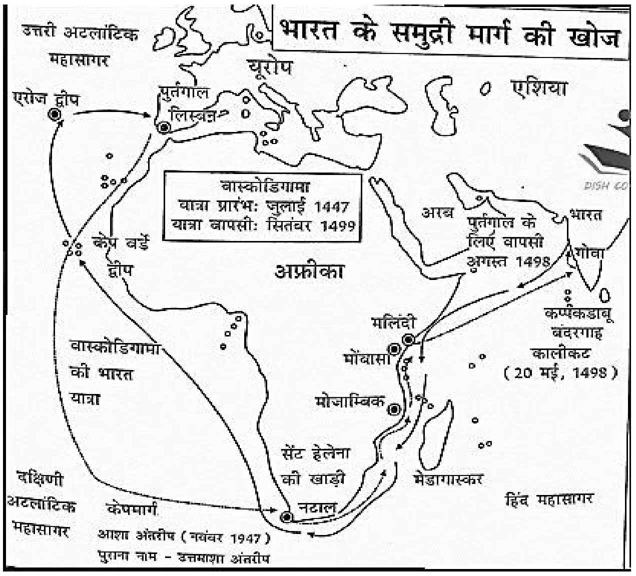

विदेशी शक्तियाँ

1. पुर्तगाली

- जहाजरानी निर्माण एवं नौ परिवहन में प्रगति
- भारत में व्यापार करके अधिक धन कमाने की लालसा
- यूरोप एवं एशिया के व्यापार पर वेनिस एवं जेनेवा के व्यापारियों का अधिकार
- एशिया का अधिकांश व्यापार अरबवासियों तथा यूरोपीय व्यापार इटली वालों के हाथो में था इस व्यापार चक्र को तोड़ने के लिए नए व्यापारिक क्षेत्रों की आवश्यकता थी
- **यूरोपीय शासकों** जैसे स्पेन की महारानी ईशाबेला तथा पुर्तगाल के राजकुमार प्रिंस हेनरी आदि द्वारा **समुद्री खोजो को प्रोत्साहन**।
- **साहसी नाविकों का योगदान**: बार्थोलोमियो डियास (पुर्तगाली नाविक) ने 1487 ई. में उत्तम आशा अन्तरीप **'Cape of Good Hope'** की खोज की। 1492 ई. में स्पेनवासी कोलम्बस अमेरिका तथा 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक **वास्कोडिगामा** भारत पंहुचा।

पुर्तगालियों के प्रारम्भिक अभियान

वास्कोडिगामा	• कैप ऑफ़ द गुड होप होते हुए एक गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मुनीक की सहायता से कालीकट बंदरगाह पर कप्पकडाबू नामक स्थान पर 17 मई 1498 को पंहुचा। • कालीकट के राजा जमोरिन से व्यापर करने की अनुमति प्राप्त की • कन्नूर में, उन्होंने एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया
पेड्रो अल्वारेज़ केबरेल	• 1500 में कालीकट में भारत में पहला यूरोपीय कारखाना स्थापित किया • पुर्तगालियों पर अरब हमले का सफलतापूर्वक जवाब दिया • कालीकट पर बमबारी की और कोचीन और कन्नूर के शासकों के साथ लाभकारी संधियाँ कीं

फ्रांसिस्को डी अल्मीडा (1505-1509)	• यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था । • 1505 में, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने भारत में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया। • उसने अंजदिवा, कोचीन, कन्नानोर और किलवा में किले बनवाए। . • इसने ब्लू वाटर पॉलिसी तथा कार्टेज प्रणाली जारी की
अल्फांसो डी अल्बुकर्क (1509-1515)	• भारत में पुर्तगालियों का वास्तविक संस्थापक • 1510 ई. में बीजापुर के शासक युसुफ आदिल शाह से गोवा छीना • पुर्तगालियों को भारत में बसने तथा भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया • पहला गवर्नर था जिसने अपने क्षेत्राधिकार में सती प्रथा पर रोक लगाई। • पुर्तगाली सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की • विजयनगर के शासक कृष्णदेवराय से इसके अच्छे सम्बन्ध थे । • अधिकार का क्रम ○ गोवा 1510 ○ मलक्का 1511 ○ हारमुज 1515 • इसने गोवा को राजनितिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभारा
नीनो-डी-कुन्हा	• गोवा को राजधानी बनाया • अंग्रेजो के मुकाबले नौसैनिक क्षमता में पिछड जाना । • धार्मिक असहिष्णुता की नीति अपनाना • भारतीय स्त्रियों से विवाह एवं धर्मान्तरण • व्यापारिक प्रशासन में अकुशलता • रिश्वतखोरी एवं प्रशासनिक नियुक्तियों में भ्रष्टाचार • डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती
नोट 1503 ई. में कोचीन (कोल्लकी स्थापना की जिसे **एस्तादो दा इण्डिया** कहा गया । कम्पनी का सर्वोच्च अधिकारी एक गवर्नर होता था। इसे कम्पनी के हित में व्यापार, संधि, युद्ध विस्तार के अधिकार दिये गये ।	

ब्लू वाटर पॉलिसी -
- हिन्द महासागर क्षेत्र में पुर्तगालियों का वर्चस्व स्थापित करने के लिए अल्मीडा की सामुद्रिक नीति को ब्लू वाटर पॉलिसी के नाम से जाना जाता है

कार्टेज़ प्रणाली-
- 16वीं शताब्दी में हिंद महासागर में पुर्तगालियों द्वारा जारी नौसैनिक व्यापार लाइसेंस।
- इसी प्रकार की ब्रिटिश व्यवस्था = 20वीं सदी में नौसैनिक प्रणाली।

भारत में पुर्तगाली विस्तार
- मुंबई से दमन और दीव और फिर गुजरात तक गोवा के तट के आसपास के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया
- सैन थोम (चेन्नई में) और नागपट्टिनम (आंध्र में) में पूर्वी तट पर सैन्य चौकियों और बस्तियों की स्थापना की।
- 1579 के लगभग शाही फरमान ने उन्हें व्यापारिक गतिविधियों के लिए बंगाल में सतगाँव के पास बसा।

पुर्तगालियों का महत्व

सैन्य:
- बंदूकों के उपयोग में सैन्य शक्ति का विकास हुआ
- फील्ड गन के मुगल उपयोग और 'रकाब के तोपखाने' में योगदान दिया।
- स्पेनिश मॉडल पर पैदल सेना के ड्रिलिंग समूहों की प्रणाली का विकास किया ।

नौसेना तकनीक
- मल्टी-डेक वाले भारी जहाजों का निर्माण किया गया था इससे उन्हें भारी हथियार ले जाने की सुविधा मिली।
- शाही शस्त्रागार और डॉकयार्ड का निर्माण

सांस्कृतिक कार्य
- सिल्वरस्मिथ और सुनार की कला गोवा में फली-फूली, फिलाग्री वर्कऔर धातु के काम में गहनों का केंद्र बन गया।
- पुर्तगालियों द्वारा चर्चों के आंतरिक भाग में लकड़ी का काम, मूर्तिकला और चित्रित छतें निर्मित की गयी।

2. डच

डच कम्पनी का ढ़ांचा एवं भारत आगमन
- **कॉर्नेलिस हाउटमेन-** 1596 में भारत आने वाला पहला डच व्यक्ति
- 1602 ई. में भारत से व्यापार करने के लिए हॉलैण्ड की संसद द्वारा एक कम्पनी का गठन - "यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड" मूल नाम - VOC (vereenigde Oost Indische Compagnie) वेरिंग्देओस्त इंडिस
- डच कम्पनी एक अर्धसरकारी कम्पनी थी जो एक निदेशक मंडल द्वारा चलाई जाती थी । इसमें कुल 17 व्यक्ति शामिल थे जिन्हें **Gentlemen** 17 कहा जाता था ।
- **कम्पनी के दो मुख्यालय थे** - एम्सटर्डम (नीदरलैंण्ड), बटाविया (इण्डोनेशिया)

- भारत में डचों की पहली फैक्ट्री 1605 ई. में मसूलीपत्तनम (आंध्र प्रदेश) में स्थापित हुई ।
- बंगाल में डचों ने प्रथम फैक्ट्री की स्थापना पीपली में की
- डचों ने भारत में मुख्यतः पूर्वी तट पर अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की जो निम्न हैं-

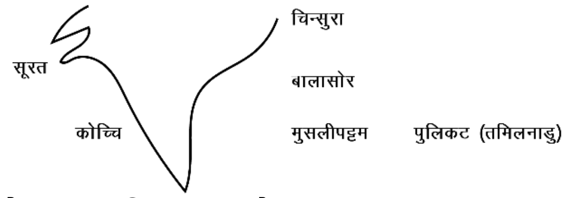

<u>डचों द्वारा स्थापित कारखाने</u>

- प्रथम - मसूलीपत्तनम
- द्वितीय - पत्तोपोली (निज़ामपट्नम)
- तृतीय- पुलीकट 1610
- अन्य कारखाने – सूरत (1616), विमलीपत्तनम, कराईकल (1645), चिनसुरा (1653), कोचीन (1663), कासिम बाजार, बालासोर, नागापत्तनम (1658)

मुख्यालय

- पुलीकट को डचों ने व्यापारिक केंद्र एवं मुख्यालय बनाया
- 1690 में पुलीकट के स्थान पर नागपट्टनम को मुख्यालय बनाया

प्रमुख किला या फोर्ट

- चिनसुरा में गुस्तावुस फोर्ट की स्थापना 1653 ईसवी में हुई
- कोच्चि में फोर्ट विलियम की स्थापना 1663 ईसवी में हुई

नोट

- डचों ने मलक्का या मसाला द्वीप जिसे इंडोनेशिया कहा जाता है इसको पुर्तगालियों से जीता एवं श्रीलंका को भी जीता
- डचों ने जकार्ता को जीतकर नए नगर बटाविया की स्थापना की
- मुग़ल बादशाह औरंगजेब ने 3.5 प्रतिशत वार्षिक चुंगी पर बंगाल ,बिहार और ओडिसा में व्यापार का एकाधिकार डचों को प्रदान किया
- डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता या कार्टल पर आधारित थी
- डच मूल रूप से काली मिर्च एवं अन्य मसालों के व्यापार में ही रूचि रखते थे ये मसाले मूलतः इंडोनेशिया में अधिक मिलते थे इसलिए वह डच कम्पनी का प्रमुख केंद्र बन गया
- डचों ने भारत में मसालों के स्थान पर भारतीय कपड़ो के व्यापार को अधिक महत्व दिया
- भारत में डचों के आने से सूती वस्त्र उद्योग का विकास हुआ एवं भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है

<u>भारत में डचों के अधीन व्यापार</u>

- **नील उत्पादक प्रमुख क्षेत्र :** यमुना घाटी और मध्य भारत,
- **कपड़ा और रेशम**: बंगाल, गुजरात और कोरोमंडल,
- **साल्टपीटर:** बिहार
- **अफीम और चावल**: गंगा घाटी।
- काली मिर्च और मसालों का एकाधिकार व्यापार।

आयात-निर्यात

- डच सोना-चाँदी, पारा, ऊन तथा काँच की वस्तुएँ भारत से ले जाते थे ।
- वे भारत से सूती एवं रेशमी वस्त्र, धागा, नील, अफीम, मसाले, चीनी, धातु की बनी वस्तुएँ, शोरा आदि निर्यात करते थे ।

<u>डचों के पतन कारण</u>

- अंग्रेजों से प्रतिद्वंदिता
- डच कंपनी का नियंत्रण सीधे डच सरकार के हाथ में था इसलिए कंपनी अपनी इच्छा अनुसार विस्तार नहीं कर सकती थी
- अंग्रेजों की नौसैनिक शक्ति डचों की तुलना में अधिक मजबूत थी
- डचों की भारत से अधिक रूचि इंडोनेशिया एवं मसाला द्वीपों में थी
- कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अयोग्य प्रशासक
- 1759 ई. में बेदरा (बंगाल) के युद्ध में अंग्रेजो ने डचों को बुरी तरह पराजित किया जिससे डचों की शक्ति भारत में समाप्त हो गयी। बाद में इन्होंने अपनी अधिकांश फैक्ट्रियाँ अंग्रेजो को बेच दी ।
- कोलाचेल की लड़ाई (1741) डच और त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा की लड़ाई ने मालाबार क्षेत्र में डच सत्ता का पूर्ण सफाया कर दिया।

<u>महत्व</u>

- **भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है**

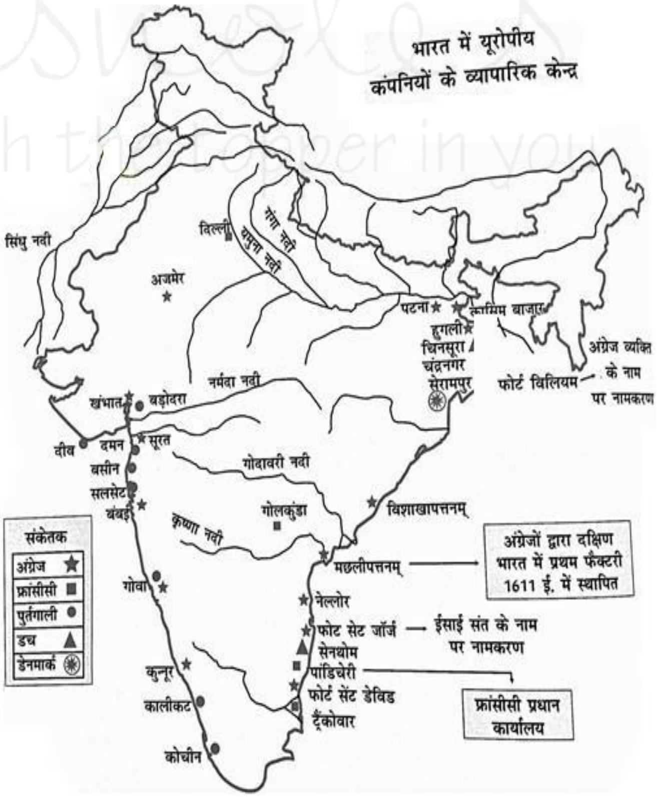

3. ब्रिटिश/अंग्रेज

ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा:

- 1599 ईसवी में जॉन मिलडेन हॉल ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया
- 1599 में इंग्लैंड में मर्चेंट एडवेंचर नामक एक व्यापारिक दल ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा दी गवर्नर एंड कंपनी ऑफ़ मर्चेंट ऑफ़ ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज की स्थापना की जो बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी कहलाई ।
- 31 दिसम्बर1600 को महारानी एलिजाबेथ -1 प्रथम ने एक रॉयल चार्टर जारी कर इस कंपनी को 15 वर्षो के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार पत्र प्रदान किया और आगे जाकर 1609 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स-प्रथम ने कंपनी को अनिश्चित काल के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया
- कंपनी का प्रारंभिक उद्देश्य भू-भाग नहीं बल्कि व्याkiपार करना था
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की प्रथम समुद्री यात्रा 1601 में जावा, सुमात्रा एवं मलक्का के लिए हुई

ढ़ाँचा

- एक निजी कम्पनी
- 24 सदस्यीय बार्ड ऑफ डायरेक्टर्स द्वारा संचालित जिसका सर्वोच्च अधिकारी गवर्नर था ।
- गवर्नर को युद्ध, संधि, विस्तार आदि करने का अधिकार।

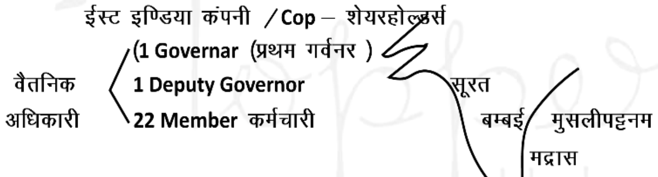

भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियों की स्थापना

1609	• **हैक्टर** नामक पहला अंग्रेजी जहाज हॉकिन्स के नेतृत्व में भारत आया • कैप्टन हॉकिन्स **सूरत** में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर के दरबार में पहुंचे, लेकिन सफल नहीं हुए • पुर्तगालियों के विरोध का सामना करना पड़ा
1611	• मसूलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया और बाद में 1616 में एक कारखाना स्थापित किया।
1612	• कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के पास समुद्र में पुर्तगालियों को हराया; • 1613 में थॉमस एल्डवर्थ के तहत सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहांगीर से अनुमति प्राप्त हुई।
1615	• जेम्स प्रथम के एक मान्यता प्राप्त राजदूत सर थॉमस रो, जहांगीर के दरबार में आए, फरवरी 1619 तक वहां रहे।
1632	• गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा जारी 'गोल्डन फरमान' प्राप्त किया
1662	• जब चार्ल्स ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से शादी की, तो पुर्तगाल के राजा द्वारा बॉम्बे को राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में उपहार में दिया गया था
1687	• पश्चिमी प्रेसीडेंसी की सीट सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दी गई

दक्षिण भारत

- **दक्षिण भारत की प्रथम व्यापारिक कोठी** - 1611 में **मछली पट्टनम**। इसके बाद मद्रास में व्यापारिक कोठी की स्थापना की

पूर्वी भारत

- **पूर्वी भारत का प्रथम कारखाना - 1633 में उड़ीसा के बालासोर में**
- अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर अनेक फैक्ट्रियों की स्थापना की जो निम्न हैं –
  - हरिहरपुर (बंगाल), बालासोर (उडीसा), पटना, हुगल, कासिम बाजार (बंगाल)

मद्रास

- **फ्रांसिस डे ने 1639 में चंद्रगिरी के राजा** से मद्रास को पट्टे पर लिया जहां बाद में **फोर्ट सेंट जॉर्ज** कोठी का निर्माण किया गया

गोलकुंडा

- **गोलकुंडा के सुल्तान** के द्वारा 1632 में **"सुनहरा फरमान"** के माध्यम से गोलकुंडा राज्य में स्वतंत्रता पूर्वक व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गयी
- ईस्ट इण्डिया कंपनी की प्रथम फैक्ट्री (भारत में प्रथम) गोलकुण्डा राज्य (मुसलीपट्टनम) में स्थापित हुई ।

मुंबई

- **1661** में ब्रिटेन के **राजा चार्ल्स द्वितीय** ने पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह किया जिसमे दहेज़ के रूप में ब्रिटेन के राजा को मुंबई टापू मिल गया। चार्ल्स ने इसे 10 पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया
- 1669 और 1677 के बीच कंपनी के **गवर्नर जेराल्ड आंगियर ने आधुनिक मुंबई नगर की स्थापना की** और बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने ब्रिटिश सरकार से बम्बई को प्राप्त किया

मुग़ल तथा अंग्रेज

- 1691 में औरंगजेब ने एक निश्चित राशि के बदले कंपनी को बंगाल में चुंगी रहित व्यापार की अनुमति दी।
- **शाही फरमान - मुग़ल सम्राट फर्रुखशियर** की बीमारी का इलाज कंपनी के एक डॉक्टर **विलियम हैमिल्टन** के

द्वारा सफलता पूर्वक किया गया जिससे बादशाह ने खुश होकर एक **फरमान** जारी कर दिया जिसमे एक निश्चित **वार्षिक कर 3000 रुपये** चुकाकर निशुल्क व्यापर करने एवं मुंबई में कंपनी ढाले गए सिक्के को संपूर्ण मुग़ल राज्य में चलाने की आज्ञा मिल गयी। अब उन्हें वही कर देने पड़ेगे जो भारतीयों को देने पड़ते है।

- ब्रिटिश इतिहासकार और्म्स ने इसको **कंपनी का अधिकार पत्र या मैग्नाकार्टा** कहा।
- बंगाल के नबाव मुर्शीद कुली खां ने फर्रुखशियर द्वारा दिए गए फरमान के बंगाल में स्वतंत्र प्रयोग को नियंत्रित करने का प्रयास किया
- मराठा सेना नायक **कान्होजी आगरिया** ने पश्चमी तट पर अंग्रेजों की स्थिति को काफी कमजोर बना दिया।

बंगाल में विस्तार

- बंगाल में कारखाने: **हुगली (1651), कासिमबाजार, पटना** और **राजमहल।**
- **सुतानती,कालिकाता और गोविंदपुर** तीनो गांव को मिलाकर **जॉब चार्नोक** ने कलकत्ता शहर की नीव रखी और कंपनी ने यही पर **फोर्ट विलियम किले** की स्थापना की और **चार्ल्स आयर को प्रथम प्रेसीडेंट** नियुक्त किया गया ।
- कलकत्ता को अंग्रेजों ने 1700 में पहला प्रेसीडेंट नगर घोषित किया। 1774 से 1911 तक कलकत्ता ब्रिटिश भारत की राजधानी बना रहा
- **विलियम हैजेज** बंगाल का प्रथम अंग्रेज गवर्नर था।

4. फ्रांसीसी

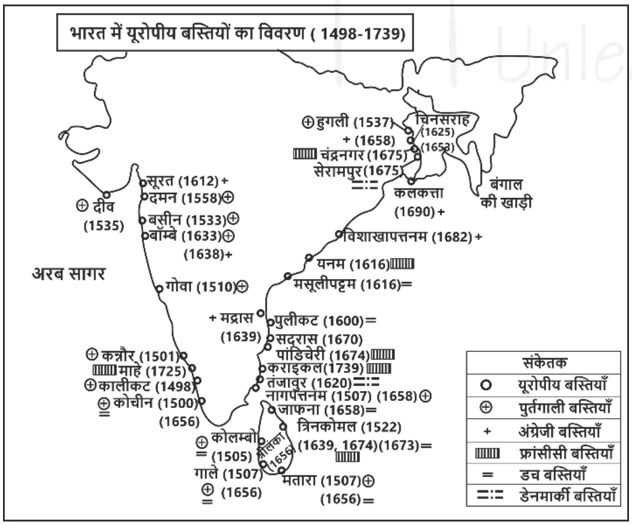

<u>फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी</u>

- भारत में आने वाली अंतिम यूरोपीय शक्ति
- फ्रांस के सम्राट **लुई 14वे** के मंत्री कॉल्बर्ट ने **1664** में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी। जिसे **'The compaginie des Indes Orientales'** कहा गया।
- इसे सरकारी व्यापारिक कंपनी भी कहा जाता था क्योकि यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी तथा सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी
- प्रथम फ्रांसिसी फैक्ट्री **- सूरत में 1668** में **फ्रांसिस केरॉन** द्वारा
- **1669** में **मसूलीपट्टनम** में दूसरी फ्रैंच फैक्ट्री की स्थापना की
- **'पांडिचेरी' की नींव** -1673 में कंपनी के निदेशक **फ्रेंको मार्टिन तथा लेस्पिने** ने **वलिकोण्डपुरम के सूबेदार शेरखान लोदी** से कुछ गॉव प्राप्त कियेजिसे कालान्तर में **पांडिचेरी** कहा गया
- **1673** में बंगाल के **नबाब शाइस्ता खान** ने फ्रांसिसीयो को एक जगह किराये पर दी जहाँ **चंद्रनगर** की प्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गयी ।
- पांडिचेरी को पूर्व में फ्रांसीसी बस्तियों का **मुख्यालय** बनाया गया और मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का महानिदेशक नियुक्त किया गया।
- 1693 में डचों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया सितंबर 1697 में संपन्न हुई रिसविक की संधि से पांडिचेरी फ्रेंच को वापस मिला
- पांडिचेरी के कारखाने में ही **मार्टिन** ने **फोर्ट लुई** का निर्माण कराया।
- फ्रांसीसियों द्वारा 1721 ई. में मारीशस, 1725 ई. में माहे (मालाबार तट) एवं 1739 ई. में कराईकल पर अधिकार कर लिया गया ।
- महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र: माहे, कराईकल, बालासोर और कासिम बाजार
- 1742 ई. के पश्चात व्यापारिक लाभ कमाने के साथ साथ फ्रांसीसियों की राजनीतिक महत्त्वकांक्षाए भी जाग्रत हो गई। परिणामस्वरुप अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध छिड़ गया। इन युद्धों को **'कर्नाटक युद्ध'** के नाम से जानते है।

<u>ब्रिटिश फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता</u>

- भारत में एंग्लो-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता इंग्लैंड और फ्रांस की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता, जो उत्तराधिकार के ऑस्ट्रियाई युद्ध से शुरू होकर सप्तवर्षीय युद्ध के साथ समाप्त होती है।
- 1740 में, दक्षिण भारत में राजनीतिक स्थिति अनिश्चित और भ्रमित थी। हैदराबाद के निज़ाम आसफ़जाह बूढ़े थे और पूरी तरह से पश्चिम में मराठों से लड़ने में लगे हुए थे।अत: एंग्लो फ्रेंच प्रतिद्वंद्विता की परिणीति कर्नाटक युद्धों के रूप में हुई

<u>फ्रांसीसियों की पराजय के कारण</u>

- फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः सरकारी कंपनी होने के कारण निर्णय लेने मे विलंब
- अधिकारियों मे सहयोग एवं समन्वय का अभाव
- नौसैनिक क्षमता ब्रिटिश की तुलना में कमजोर थी।
- ब्रिटिशकंपनी को उनकी अपनी सरकार का जितना समर्थन मिला वैसा फ्रांसीसी कंपनी को प्राप्त नहीं हुआ।

महत्व

- राजनीतिक हस्तक्षेप कर आर्थिक लाभ लेने की अवधारणा का सूत्रपात भारत में फ्रांसीसी अधिकारी डूप्ले ने किया जिसे आगे चलकर अंग्रेजों ने अपनाया।

डेनिश का भारत में आगमन

- **डेनमार्क** की ईस्ट इंडिया कंपनी की स्था0पना **1616** में की गई थी |
- ये भी व्यापार के उद्देश्य से यह भी भारत में आये
- पहली फैक्ट्री - त्रावणकोर (तंजोर ,तमिलनाडु) 1620 में
- दूसरी फैक्ट्री - सीरमपुर (बंगाल) 1676 में
- 1745 में अपनी सभी फैक्ट्री अंग्रेजों को बेच दी एवं भारत से चले गए |

कर्नाटक युद्ध

- कोरोमंडल समुद्र तट पर स्थित क्षेत्र जिसे कर्नाटक या कर्णाटक कहा जाता था। परंतु अधिकार को लेकर इन दोनों कंपनियों में लगभग बीस वर्ष तक संघर्ष हुआ।
- कोरोमंडल समुद्रतट पर स्थित किलाबंद मद्रास और पांडिचेरी क्रमशः अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की सामरिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण बस्तियाँ थी। तत्कालीन कर्नाटक दक्कन के सूबेदार के नियंत्रण में था, जिसकी राजधानी आरकाट थी।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.)

- **कारण** -आस्ट्रिया के उताराधिकार युद्ध का विस्तार।
- तात्कालिक कारण - अंग्रेज कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जहांजों पर अधिकार कर लेना। बदलें में मारीशस के फ्रांसीसी गवर्नर ला बुर्डोने के सहयोग से डूप्ले ने मद्रास के गवर्नर मोर्स को आत्म समर्पण के लिए मजबूर कर दिया।
- **नेतृत्व** - अंग्रेजों का नेतृत्व बर्नेट तथा फ्रांसीसियों का डूप्ले कर रहे थे।
- **परिणाम** - कर्नाटक के नवाब की सहायता से युद्ध में फ्रांसीसी विजयी हुए । इस युद्ध में नौसैनिक शक्ति की महत्ता स्थापित हुई।
- **संधि**- 1748 ई. में यूरोप में एक्स-ला-शापेल नामक संधि के सम्पन्न होने पर भारत में भी इन दोनों कंपनियों के बीच संघर्ष समाप्त हो गया।

सेंटथोमे का युद्ध (1748 ई.) यह युद्ध अडयार नदी के तट पर फ्रांसीसियों (डूप्ले) तथा कर्नाटक के नबाव (अनवरुद्दीन) के बीच । डूप्ले की विजय।

- **युद्ध का कारण -** डूप्ले द्वारा नवाब से किये गये वादे से पीछे हटना
- महफूज खां के नेतृत्व में दस हजार सिपाहियों की एक सेना का फ्रांसीसियों पर आक्रमण, कैप्टन पैराडाइज के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने सेंटथोमे के युद्ध में नवाब को पराजित किया।

- जून,1748 ई. में अंग्रेज रियर-एडमिरल बोस्काबेन के नेतृत्व में एक जहांजी बेडे ने पांडिचेरी को घेरा,परंतु सफलता नहीं मिली।

Note: यह प्रथम युद्ध था जिसमें किसी यूरोपीय शक्ति ने आधुनिक काल में किसी भारतीय शासक को हराया था ।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54ई.)

कारण:

1. हैदराबाद तथा कर्नाटक राज्य में उत्तराधिकार का मुद्दा ।
   हैदराबाद - हैदराबाद में उत्तराधिकार को लेकर निजाम आसफ़जाह के पुत्र -नासिर जंग और भतीजे मुजफ़्फ़रजंग (आसफजहा का पौत्र) के तथा कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन तथा उसके बहनोई चंदा साहिब के बीच विवाद। इसमें अंग्रेज तथा फ्रांसीसी भी कूद पड़े । फलत: दो गुट बन गये।डूप्ले ने चंदा साहिब तथा मुजफ्फर जंग को तथा अंग्रेजों ने अनवरुद्दीन और नासिरजंग को समर्थन प्रदान किया।

दो गुट

MCF	NAE
मुजफ्फर जंग चंदा साहिब	नासिर जंग अनवरुद्दीन
फ्रांसीसी	अंग्रेज

2. अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी महत्त्वाकांक्षा/प्रतिस्पर्द्धा

परिणाम: पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।

अम्बर का युद्ध (1749 ई.) -

- **1749 में** फ्रेंच सेना की सहायता से एक युद्ध में **चंदासाहब ने अंबर में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार** डाला तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर अधिकार कर लिया तथा चंदा साहिब कर्नाटक के अगले नवाब बने। अनवरुद्दीन का पुत्र **मुहम्मद अली** युद्ध में बचकर भाग गया और उसने **त्रिचनापल्ली** में शरण ली।
- लेकिन मुजफ्फर जंग दक्कन की सूबेदारी हेतु अपने भाई नासिर जंग से पराजित हुआ।
- 1750 में नासिर जंग भी फ्रेंच सेना से संघर्ष करता हुआ मारा गया **और मुजफ्फर जंग हैदराबाद** का नबाब बना दिया गया।
- इस समय दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का प्रभाव चरम पर था।
- इसी बीच **राबर्ट क्लाइव** ने 1751ई. में 500 सिपाहियों के साथ धारवार पर धावा बोलकर कब्जा कर लिया।
- फ्रांसिसीयो ने चांदा साहब की सेना की साथ मिलकर दुर्ग को घेर लिया अंग्रेजो की तरफ से क्लाइव इस घेरे को तोड़ने में असफल रहा और क्लाइव ने अपनी सूझ बूझ से कर्नाटक की राजधानी अर्काट पर अधिकार कर लिया
- **1752** में **स्ट्रिंगर लॉरेंस** के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने त्रिचनापल्ली को बचा लिया और फ़्रांसिसी सेना ने अंग्रेजो के

सामने आत्मसमर्पण कर दिया और चांदा साहब की हत्या कर दी गई।

- डुप्ले को वापस बुला लिया गया तथा 1754 में **गोडेहू** अगला फ्रांसिसी गवर्नर बनकर भारत आया । पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।
- डूप्ले के बारे में **जे.और.मैरियत** ने कहा कि **'डूप्ले ने भारत की कुंजी मद्रास में तलाश कर भयानक भूल की, क्लाइव ने इसे बंगाल में खोज लिया।**

<u>तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ई.)</u>

- **कारण:** यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध का प्रारम्भ होना। तात्कालिक कारण - क्लाइव और वाट्सन द्वारा बंगाल स्थित चंद्रनगर पर अधिकार करना।
- **नेतृत्व:** फ्रांसीसी (काउण्ट लाली) एवं अंग्रेज (आयरकूट)
- **परिणाम:-** 22 जनवरी 1760 ई. के वांडीवाश के युद्ध में आयरकूट ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह पराजित किया अंग्रजो ने भारत में अन्य यूरोपीय शक्तियों को समाप्त कर सबसे बड़ी शक्ति बनकर सामने आये अब उनका मुकाबला केवल भारतीय राजाओ से था।
- **संधि -** 1763 ई. में पेरिस की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हुआ ।

<u>फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की जीत के कारण</u>

- **दोनों कम्पनियों के ढाँचे में अन्तर -** सरकार एवं निजी
- **यूरोप में फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की राजनीतिक स्थिति एवं स्थायित्व काफी मजबूत था** (पार्लियामेण्ट (अंग्रेज) एवं निरंकुश राजशाही (फ्रांस)
- ब्रिटेन में कृषि एवं **औद्योगिक क्रान्ति** के परिणामस्वरूप फ्रांस की अपेक्षा आर्थिक समृद्वि अधिक बेहतर
- हिन्द महासागर में अंग्रेजी नौसेना का काफी दबदबा। उन्होनें प्रारम्भ से ही मद्रास, बम्बई, कलकत्ता के नौसैनिक ठिकानों का विकास किया।
- फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों ने प्रारम्भ से ही **व्यापार-वाणिज्य, राजस्व प्राप्ति** पर विशेष ध्यान दिया। अंग्रेजों (क्लाइव) की बंगाल को आधार बनाकर विस्तार की रणनीति

<u>अन्य यूरोपीय शक्ति के खिलाफ अंग्रेजी की सफलता के कारण</u>

- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अन्य कंपनियों के विपरीत एक निजी कंपनी थी।
- ब्रिटेन के पास विशाल एवं अत्याधुनिक नौसेना होना।
- ब्रिटेन में कृषि एवं औद्योगिक क्रांति के कारण आर्थिक सम्पन्नता
- ब्रिटेन के पास एक अनुशासित और तकनिकी रूप से विकसित सेना का होना
- फ्रांस, डच आदि के विपरीत ब्रिटेन में एक स्थायी शासन की उपस्थिति
- अन्य कंपनियों की रूचि ईसाई धर्म के प्रसार में अधिक थी, जबकि अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी धर्म से ज्यादा व्यापार विस्तार में रूचि रखते थे।
- ऋण बाजार का उपयोग- **दुनिया के पहला केंद्रीय बैंक, बैंक ऑफ इंग्लैंड** की स्थापना सरकारी ऋण को मुद्रा बाजारों में बेचने के लिए की गई थी।

छत्तीसगढ़ का इतिहास

छत्तीसगढ इतिहास की महत्वपूर्ण तिथियाँ

600 – 200 ई. पू.	– बौद्ध मौर्यकालीन छत्तीसगढ
200 – 60 ई. पू.	– सातवाहन युग
400 – 600 ई.	– गुप्त वाकाटकों का आधिपत्य
600–1200 ई.	– पूर्व मध्ययुगीन छत्तीसगढ
400–1100 ई.	– नल वंश
1075 ई.	– कल्चुरी शासन, रतनपुर
1095 ई.	– जाजल्लदेव रतनपुर का राजा बना
1127 ई.	– रत्नदेव द्वितीय रतनपुर का राजा बना
1167 ई.	– मल्हार शिलालेख
1213 ई.	– प्रतापमल्ल राजा से संबन्धित ताम्रपत्र पेंड्राबांध से
1216 ई.	– प्रतापमल्ल राजा से संबन्धित ताम्रपत्र कोनरी से
1217 ई.	– प्रतापमल्ल राजा से संबन्धित ताम्रपत्र
1369 ई.	– कल्चुरी शासन खल्लरी में
1410 ई.	– रायपुर में कल्चुरी शासन
1415 ई.	– देवपाल मोंची ने नारायण पाल का मंदिर बनवाया
1420 ई.	– केशव देव राजा के काल का खिताब – सीता बल्दी का युद्ध
1479 ई.	– 'छत्तीसगढ' शब्द का प्रयोग, कवि दलराम राव द्वारा
1513 ई.	– कोंसगई के दो शिलालेख प्राप्त हुए
1672 ई.	– कुतुबशाह ने 1672 ई. तक शासन किया
1741 ई.	– छत्तीसगढ पर मराठा भास्कर पंत का आक्रमण
1746 ई.	– खूब तमाशा की रचना
1756 ई.	– संत गुरुघासीदास का जन्म गिरौदपुरी (रायपुर)
1758 ई.	– रघुजी भोंसले के पुत्र बिंबाजी छत्तीसगढ के प्रशासक नियुक्त हुए

1758-87 ई.	- बिंबाजी भोंसले का शासन
1777-79 ई.	- बस्तर की हल्बा क्रांति
1777-1800 ई.	- दरिया देव मराठा भोंसलों के अधीन काकतीय राजा
1779 ई.	- महाप्रभु वल्लभाचार्य का जन्म
1818-80 ई.	- छत्तीसगढ में ब्रिटिश संरक्षणधीन मराठा शासन
1826 ई.	- ब्रिटिश - भोंसला संधि
1827 ई.	- संबल नरेश महाराज साथ की मृत्यु
1829 ई.	- ब्रिटिश - भोंसला दूसरी संधि
1830 ई.	- राजनांदगाँव कपडा मिल की स्थापना
1842-53 ई.	- दरिया देव भोंसले के अधीन काकतीय राजा
1853 ई.	- रघुजी तृतीय की मृत्यु
1830-54 ई.	- छत्तीसगढ में पुनः भोंसले शासन
1854 ई.	- छत्तीसगढ समेत नागपुर राज्य का ब्रिटिश साम्राज्य मे विलय
1855 ई.	- छत्तीसगढ का प्रथम डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स सी. इलियट बने, नागपुर रुपए का चलन समाप्त, ब्रिटिश रुपया का चलना आरंभ।
1856 ई.	- सोनाखान का विद्रोह, भीषण अकाल, वीरनारायन सिंह द्वारा, कसडोल के एक व्यापारी, माखन के गोदाम का अनाज लूटकर भूखी प्रजा में बाँटना
1857 ई.	- विद्रोह के दौरान वीर नारायण सिंह को फांसी दी गयी।
10 दिसंबर 1875 ई.	- रायपुर जयस्तंभ चौक पर वीर नारायण सिंह मृत्युदंड। छत्तीसगढ के प्रथम शहीद हुए।
1876 ई.	- मुरिया विद्रोह
1939 ई.	- बरदाटौला जंगल सत्याग्रह
1945 ई.	- बलौदा बाजार में किसान को - ओपरेटिव राईस मिल
1947 ई.	- छत्तीसगढ में स्वतन्त्रता दीवाल मनाया गया
1948 ई.	- रियासतों का भारतीय संघ में विलय
1951 ई.	- 'महाकौशल' दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रथम प्रारम्भ

1956 ई.	– छत्तीसगढ महासभा का गठन डा. खूबचन्द बघेल द्वारा छत्तीसगढ म. प्र. का भाग बना
1958 ई.	– इन्दिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ की स्थापना
1963 ई.	– रायपुर आकाशवाणी केंद्र की स्थापना (छत्तीसगढ में प्रथम)
1964 ई.	– प. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर की स्थापना
1994 ई.	– म. प्र. विधानसभा द्वारा पृथक छत्तीसगढ की माँग पर संकल्प पारित
1998 ई.	– 9 जिलों का गठन
25 जुलाई 2000 ई.	– 25 जुलाई को लोकसभा मे म. प्र. पुनर्गठन विधेयक प्रस्तुत
31 जुलाई 2000 ई.	– लोकसभा मे म. प्र. पुनर्गठन विधेयक 2000 पारित
9 अगस्त 2000 ई.	– राज्यसभा मे म. प्र. पुनर्गठन 2000 पारित
28 अगस्त 2000 ई.	– राष्ट्रपति द्वारा म. प्र. पुनर्गठन विधेयक 2000 अनुमोदित
1 नवंबर 2000 ई.	– 26वाँ राज्य छत्तीसगढ की स्थापना
15 अगस्त 2001 ई.	– सरगुजा पुलिस रेंज की स्थापना
2002 ई.	– छत्तीसगढ में कमिश्नर प्रणाली समाप्त
26 जनवरी 2011 ई.	– 108 संजीवनी सेवा प्रारम्भ
जनवरी 2011 ई.	– महतारी योजना प्रारम्भ
15 अगस्त 2011 ई.	– 9 नए जिलों की घोषणा
09 जनवरी 2012 ई.	– 9 नए जिलों की स्थापना
21 अप्रैल 2012 ई.	– कलेक्टर, अलेक्सपाल मेनन का नक्सलियों द्वारा अपरहण
मई 2012 ई.	– कलेक्टर अलेक्स पाल मेनन रिहा
25 जुलाई 2012 ई.	– जर्दा गुटखा की बिक्री पर प्रतिबंध
26 जुलाई 2012 ई.	– छत्तीसगढ का प्रथम ई . ग्रंथालय अम्बिकापुर (सरगुजा) में स्थापित

छत्तीसगढ का प्राचीन इतिहास

1. प्रागैतिहासिक काल
2. वैदिक काल
3. बुद्ध काल
4. मौर्य एवं सातवाहन काल
5. गुप्त काल

1. प्रागैतिहासिक काल – प्रागैतिहासिक काल उसे कहते है, जिस काल में मनुष्य ने उस समय होने वाली किसी भी घटनाओं का कोई लिखित प्रमाण नहीं रखा। इस काल के अनेक प्रमाण छत्तीसगढ के विभिन्न क्षेत्रों से मिले है। इस काल में मनुष्य (गुफाओं) कंदराओ में रहता था । तब उसने इन शैलाश्रयों में अनेक चित्र बनाएँ । इसके अलावा इस काल के विविध औजार एवं स्मारक भी छत्तीसगढ में मिले है।

महत्वपूर्ण बिंदु प्रागैतिहासिक काल

- अंबिकापुर के जिला मुख्यालय शहर से लगभग *40* किलोमीटर दूर और रायपुर से लगभग *350* किलोमीटर दूर छत्तीसगढ सरकार के पुरातात्विक विभाग द्वारा महेशपुर क्षेत्र में रेणुका नदी (जिसे स्थानीय लोगों द्वारा रेणु कहा जाता है) के तट पर उत्खनन सर्वेक्षण के दौरान उपकरणों और कलाकृतियाँ मिली थी।
- छत्तीसगढ में मध्य पाषाण से लेकर ऐतिहासिक काल तक के शैल चित्र बहुत समृद्ध है और जैसा कि ऊपर कहा गया है कुछ शैल चित्र प्रागैतिहासिक काल के भी है जो आरंभिक मनुष्य के जीवन के तरीकों और कलाओं पर कई शैल चित्र रोचक प्रकाश डालते है।
- छत्तीसगढ राज्य में अब तक के सबसे विपुल रॉक कला स्थल सिंघनपुर, काबरा, पहाड, बसनाझर, ओंगना, कर्मगढ, खैरपुर, बोटलडा, बस्तरखारोल, अमरगुफा, गाताडीह, सिरोली, डोंगरी, बैनी पहाड आदि रायगढ जिले में स्थित है।
- इनमें से कुछ पहले से ही ज्ञात थे और कुछ को जिले में *2* साल के सर्वेक्षण के दौरान पता चला था। अधिकांश स्थानों पर साँप, पक्षी, हाथी कूबड वाले मवेशी, जंगली भैंस, जंगली सूअर, हिरण, गैंडा, मानव आकृतियाँ, स्तनधारी, शिकार के दृश्य, ज्यामितीय डिजाइन, कृषि गतिविधियों के दृश्य और कई रंगों में नृत्य के दृश्य प्राप्त किए गए है।
- कांकेर जिले में कुछ शैल चित्र उडूका, गारगोडी, खैरखेडा, कुलगाँव, गोटीटोला आदि के आश्रयों में स्थित है। इन आश्रयों में मानव आकृतियाँ, पशु आकृतियाँ, ताड के निशान बैलगाडी आदि को आमतौर पर चित्रित किया जाता है। कोरिया जिले के घोडसर और कोहबर के रॉक कला स्थल भी उल्लेखनीय है। इनमें मानव आकृतियों, जानवरों की आकृतियाँ, दिन के जीवन के दृश्य, आम तौर पर सफेद रंग में चित्रित किए गए है।

- चितवा डोंगरी दुर्ग जिला में एक चीनी मानव आकृति के गधे पर सवारी करने के दिलचस्प चित्रण, ड्रैगन की तस्वीरें और कृषि दृश्य को दर्शाया गया है। उपर्युक्त स्थलों के अलावा बस्तर जिले में लिमदारीह और सितलेखनी ओंगद्दी आदि भी है।
- सरगुजा जिले में भी कई दिलचस्प चित्रों की प्राप्ति हुई है। प्राप्त शैल चित्रों में 50 से अधिक संख्याए, जो छत्तीसगढ राज्य में स्थित मध्य पुरापाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक जानकारी देती गई।
- हजारों साल पहले की प्रागैतिहासिक काल की कलाकृतियाँ प्राप्त हुई है, जो हजारों साल पुरानी है। चट्टानों पर अधिकांश पेंटिंग और कला हमें प्रारंभिक मानव के जीवन में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। रायगढ में अमरगुफा, भंवरखोल, बैनी पहाड, बंसजर, काबरा पहाड, सिंहानपुर, ओंगना, कर्मगढ, खैरपुर, बोटलडा, सिरोली, डोंगरी आदि में कुछ सबसे दिलचस्प और दिलचस्प टुकडे मिलते है ।

<u>रायगढ जिले की शैल चित्र कला</u>

- सिंहानपुर मरमेड, सीढी पुरुषों, पशु आकृतियों, कंगारू शिकार के दृश्यों और जिराफ के चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- एक चित्रित शैल छत्तीसगढ राज्य के रायगढ जिले में सिंहपुर नामक स्थान पर स्थित है।
- यह एक दक्षिण मुखी शैल है। यह रायगढ से 20 किलोमीटर पश्चिम में एक पहाडी पर प्रकृति द्वारा बनाया गया है।
- यह स्थान भूपदेवपुर स्टेशन से 1 किलोमीटर दूर मध्य दक्षिण पूर्व रेल मार्ग के बिलासपुर – झारसुगुडा खंड पर स्थित है।
- यह छत्तीसगढ में पाई जाने वाली प्राचीन शैली की मूर्तियों में से एक है जो लगभग 30000 साल पहले की है। उन्हें 1910 के आसपास एंडरसन द्वारा खोजा गया था।
- भारत की पहली पेंटिंग रायगढ जिले के सिंगारगढ से 1918 प्राप्त किया गया था जिसे एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का 13वाँ अंक प्रकाशित किया गया था ।
- इसके बाद श्री अमरनाथ दत्त ने 1923 से 1927 तक रायगढ और आसपास के क्षेत्रों में शैल चित्रों का सर्वेक्षण किया।
- डा. एन घोष ने इस संबंध में डी. एच. गार्डन द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी दी। इसके बाद में पंडित श्री लोचन प्रसाद पांडे द्वारा कलाकृतियों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई।

<u>ओंगना गुफाएँ</u> – प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख छत्तीसगढ की गुफाओं में से एक है। यहाँ विभिन्न प्रकार के शैल चित्र प्राप्त हुए है। जो प्रागैतिहासिक काल में होने वाली विभिन्न क्रियाओं की जानकारी प्राप्त होती है। यहाँ प्राप्त शैल चित्रों में बैल, कूबड वाले बैल के समूह का चित्र प्राप्त हुआ है। साथ ही साथ यहाँ नृत्य करते हुए समूह का शैल चित्र भी प्राप्त हुआ है तथा ज्यामितीय मानव आकंडे उनमे से कुछ लंबे सिर के साथ वाले शैल चित्र प्राप्त हुआ है।

- बैल, कूबड आले बैल के समूह का चित्र

- नृत्य करते हुए समूह
- ज्यामितीय मानव – आँकडे उन्मे से कुछ लंबे सिर के साथ वाले शैल चित्र

<u>काबरा पहाड गुफाएं</u> – प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख छत्तीसगढ की गुफाओं में से एक है। यहाँ विभिन्न प्रकार के शैल चित्र प्राप्त हुए हैं, जो प्रागैतिहासिक काल में होने वाली विभिन्न क्रियाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

- काबरा शैलाश्रय के चित्रों में चित्रण की सुंदरता जिले के अन्य सभी शैल चित्रों की तुलना में बेहतर है। मध्य पाषाण काल के लंबे – चौडे औजार, अर्द्धचंद्राकार लघु पत्थर चित्रित शैल आश्रयों के पास पाए गए। जिसका उपयोग मानव द्वारा खुदाई है शिकार के लिए किया जाता था।
- पुरातत्वविदों ने मध्य पाषाण युग को *9000* ईसा पूर्व और *4000* ईसा पूर्व के बीच माना है। इस अवधि के दौरान आदिम मानव ने जानवरों को पालतू बनाया, पहिया को नवपाषाण काल का प्रमुख आविष्कार माना जाता है। नदी घाटियाँ, सबसे अच्छा मानव आश्रय स्थल रही हैं और यह क्षेत्र महानदी घाटी में आता है।

<u>राजनांदगाँव के चितवाडोंगरी</u> – इन सभी क्षेत्र से जोगिमारा गुफाओं में शैल चित्रों की प्राप्ति हुई है जो हैरू रायगढ के समीप बसनाझर, ओंगना, करमागढ, तथा लेखापाडा, सरगुजा के समीप रामगढ पहाडों से प्राप्त हुए है।

<u>बिलासपुर जिले के धनपुर तथा रायगढ जिले के सिंघनपुर</u> – यहाँ पर स्थित चित्रित शैलाश्रय के निकट से उत्तर पाषाण युग लघुकृत पाषाण औजार प्राप्त हुए हैं।

प्रागैतिहासिक काल में शामिल काल

1. पूर्ण पाषाण काल
   - इस काल के प्रमाण छत्तीसगढ के रायपुर, रायगढ के सिंगपुर गुफा से प्राप्त शैल चित्रों से मिला है। (सिंघनपुर में मानव आकृतियाँ, सीधी डंडे के आकार में तथा सीढी के आकार में प्राप्त हुई हैं)।
   - रायगढ को शैलाश्रयों का गढ कहा जाता है।
   - राज्य में सबसे अधिक शैल चित्र रायगढ से मिले है ।
   - अन्य स्थलों में रायगढ के बोतल्दा, छापामाडा, भंवरखोल, गीधा, सोनबरसा में शैलचित्रों के साथ-साथ लघुपाषाण औजार प्राप्त हुए है।

2. मध्य पाषाण काल
   - काबरा पहाड में स्थित कबरा गुफा से इस काल के संबंधित शैल चित्र मिले हैं (लंबे फलक, अर्द्धचंद्राकार, लघु पाषाण औजार आदि मिले है।)

3. उत्तर पाषाण काल
   - बिलासपुर के धनपुर से इसके प्रमाण मिले है।
   - सिंघनपुर की गुफा (रायगढ)।
   - मानव आकृतियों को चित्रित किया गया है।
   - औजारों की आकृतियाँ खुदी हुई थी।

4. नवपाषाण काल
   - राजनांदगाँव जिले के चितवाडोंगरी, दुर्ग के अर्जुनी, रायगढ के टेरम से इस काल से संबंधित चित्रित हथोडे का प्रमाण प्राप्त हुए है।

   [नोटः राजनांदगाँव के चितवाडोंगरी के शैलाश्रयों को सर्वप्रथम श्री भगवानदास सिंह बघेल और डा. रमेन्द्र नाथ मिश्र ने उजागर किया है।]

   - ताम्र और लौह युग – दुर्ग के करहीमदर, चिरचारी में महापाषाण स्मारक मिले है।
   - शवों को गाढने के लिए किया जाने वाला घेरा होता है।
   - दुर्ग जिले के धनोरा ग्राम में *500* महापाषाण स्मारक मिले है।
   - बालोद के कर्का भान्ठा में – महापाषाण घेरे और लोहे के औजार मिले है।

2. वैदिक युगीन छत्तीसगढ – वैदिक सभ्यता को दो भागों में बाँटा जाता है।

1. ऋग्वैदिक काल (*1500* ई. पू. से *1000* ई. पू.)

2. उत्तर वैदिक काल (1000 ई. पू. से 600 ई. पू.)

वैसे ऋग्वैदिक काल का छत्तीसगढ में कोई प्रमाण नहीं मिले है क्योंकि ऋग्वैदिक काल में आर्थिक प्रसार क्षेत्र पंजाब का उल्लेख नहीं प्राप्त हुआ।

उत्तर वैदिक काल में आर्थिक प्रवेश छत्तीसगढ में हुआ है। उत्तर वैदिक काल में साहित्य में नर्मदा का उल्लेख रेखा नदी के रूप में मिला है।

ऋग्वैदिक काल की भौगोलिक स्थिति

- नोट – ऋग्वेद में करीब 25 नदियों का उल्लेख हुआ है। सबसे ज्यादा सिंधु नदी का नाम, तीन बार यमुना और एक बार गंगा का हुआ है।

उत्तर वैदिक (1000 – 600 ई. पू.)

- ऋग्वैदिक काल के लोग पंजाब के क्षेत्र में रहते थे, तो पंजाब थोडा पाकिस्तान मे था, तो आर्य सबसे पहले सिंधु तथा सरस्वती नदियों के किनारे बसे (जिन्हे हम ऋग्वैदिक आर्य कहते है।) उत्तर वैदिक आर्य पूर्व की ओर बढ चले थे, और इसी समय मे उनको लोहे का ज्ञान हो गया था और इसी के साथ साथ उन्होंने खेती में लोहे का प्रयोग करना सीख लिए था जिससे अब वह खेती करने लगे थे और वह एक स्थान पर स्थिर रहने लगे थे। और कृषि में अधिक से अधिक पैदावार करने लगे थे, और इस कारण से उत्पादन मे बढोत्तरी हुई और उत्पादन में बढोत्तरी होने के कारण (खानाबदोश और घुमक्कड) जीवन मे सुधार आया।
- उत्तर वैदिक काल में शेष तीन वेद ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद् साहित्य की रचना हुई । नोटः इन्हीं साहित्य से हमें उत्तर वैदिक काल की जानकारी मिलती है। और हमें साहित्य से ही उत्तर वैदिक काल की जानकारी नहीं मिलती, हमें खुदाई द्वारा भी उत्तर वैदिक काल के बारे में जानकारी मिलती है।

उत्तर वैदिक काल की जानकारी देने वाली दो चीज है

1. साहित्य
2. खुदाई

- पूर्व वैदिक काल के छत्तीसगढ से कोई स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं होती, पर उत्तर वैदिक काल से इस क्षेत्र का उल्लेख रामायण, महाभारत और पुराणों में छत्तीसगढ की जानकारी अधिक विस्तार से देखने को मिलती है।
- रामायण काल के समय विंध्य पर्वत के दक्षिण में कौशल नामक एक शक्तिशाली राजा था। इसी से इस क्षेत्र का नाम कौशल पडा । रामायण ग्रंथ से यह पता चलता है कि भारत देश था, वह दो भागों में बाँटा था । ऊपर का भाग दक्षिण कौशल और नीचे का भाग उत्तर कौशल के नाम से जाना जाता था। जो दक्षिण में था, वह छत्तीसगढ का हिस्सा था। ऐसा कहा जाता है जो छत्तीसगढ के राजा थे, भानुमति

और जो माता कौशल्या के पिताजी थे और माता कौशल्या के पुत्र राम हैं। तो जब वह भानुमति जी का शासन था, उसके बाद महाराज दशरथ ,जो राम के पिता थे, तो उनको यह क्षेत्र प्राप्त हुआ। और आगे चलकर यह राम के शासन क्षेत्र में सम्मिलित हो गया। इन्हीं सब कारणों से जो साक्ष्य प्राप्त हैं, उससे पता चलता है छत्तीसगढ़ को दक्षिण कौशल कहा गया है।

नोटः भानुमति राजा जिनकी पुत्री कौशल्या थी, कौशल्या राजा दशरथ की तीन रानियों में प्रथम एवं राम की माता थी। भानुमति का पुत्र नहीं था। इस कारण कौशल राज्य दशरथ के क्षेत्र में मिला लिया गया। इस तरह यह अयोध्या का हिस्सा और कालांतर में राम यहाँ के भी शासक हुए।

- राम के 14 वर्षीय वनवास का अधिकांश समय इसी क्षेत्र में व्यतीत हुआ। राम ने शिवरीनारायण की यात्रा की थी और वहीं पर शबरी के जूठे बेर खाए थे।
- माना जाता है लव और कुश का जन्म तुरतुरिया (बारनवापारा) में हुआ था। राम के बाद लव उत्तर कौशल और कुश दक्षिण कौशल के शासक हुए। उसकी राजधानी कुशस्थल थी और छत्तीसगढ़ दक्षिण कौशल का हिस्सा था।
- महाभारत में कौशल का कांतर राज्य जिसे बस्तर कहा जाता है, उसका भी उल्लेख हमें छत्तीसगढ़ में प्राप्त होता है।
- राजा नल की विजय यात्रा एवं राजा कर्ण की विजय यात्रा का प्रमाण प्राप्त हुए हैं, और शिशुपाल के संदर्भ में भी कौशल का उल्लेख देखने को मिलता है।
- महाभारत काल में मीरपुर जिसे रतनपुर कहा जाता है, जो इस क्षेत्र का मुख्य केंद्र रहा था, और मोरध्वज यहाँ का शासक था।
- महाभारत काल में सिरपुर जो जब चित्रांगदपुर कहलाता था, जिस पर पांडु वंशी बभ्रुवाहन का शासन था।
- पौराणिक साहित्य में इस क्षेत्र के भूगोल और इतिहास की पर्याप्त जानकारी मिलती है, पौराणिक स्रोतों के अनुसार इस क्षेत्र में ईक्ष्वाकुवंशियों का शासन था और यह क्षेत्र मनु वैवस्वत के पुत्र विनताश्व को प्राप्त हुआ था।
- महात्मा बुद्ध दक्षिण कौशल आए थे अवदान शतक ग्रंथ के अनुसार ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत से ऐसी जानकारी मिलती है।

महाभारत काल

महाभारत महाकाव्य के अनुसार छत्तीसगढ़ प्राककौशल भाग था। अर्जुन की पत्नी चित्रांगदा सिरपुर की राजकुमारी थी और अर्जुन का पुत्र बभ्रुवाहन की राजधानी सिरपुर थी।

- मान्यता है कि महाभारत युद्ध में मोरध्वज और ताम्रध्वज ने मिलकर भाग लिया था।
- इसी काल में ऋषभ तीर्थ गूंजी जांजगीर - चांपा आया था।

इस काल की अन्य बातें

- सिरपुर - चित्रांगदपुर के नाम से जाना जाता है।